रॉबर्ट वानॉय, निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 6ए

संख्याएँ और व्यवस्थाविवरण

समीक्षा

द्वितीय. डी. 12. डी. पुरुषों को संख्या और पद सौंपे गए

चलिए वापस वहीं चलते हैं जहां हमने छोड़ा था। पिछले सत्र में हमने संख्याओं की पुस्तक के शुरुआती अध्यायों में जनगणना के आंकड़ों के बारे में बात की थी। वह आपकी रूपरेखा पर है, रोमन अंक II., D.12., d., "पुरुषों को क्रमांकित किया गया और पद सौंपे गए।" मैं उस चर्चा के विवरण में वापस नहीं जाना चाहता। आपको याद होगा कि बाइबिल के कुछ कथनों (उदाहरण के लिए, "कनान देश में आपसे शक्तिशाली सात राष्ट्र") के बारे में प्रश्न उठाए गए थे, उस समय सेनाओं के आकार के बारे में हम जो जानते हैं, और जो हम जानते हैं उसके आधार पर शहरों का आकार—उदाहरण के लिए जेरिको 7 एकड़ है। आप आश्चर्यचकित होने लगते हैं कि क्या हम वास्तव में उस भाषा को समझ पाए हैं जिसका उपयोग किया गया था, जिसका अंग्रेजी संस्करण "600,000 लड़ाकू पुरुषों" का अनुवाद करता है, जिनकी सामान्य आबादी 2 या 3 मिलियन है। मैंने उस चर्चा के अंत में कहा, "मुझे लगता है कि यह एक समस्या है जो उस लैटिन वाक्यांश 'कुछ जिस पर आप बोल नहीं सकते' की श्रेणी में है।" यहां कुछ ऐसा चल रहा है जो पूरी तरह से समझा नहीं गया है।

मुझे नहीं लगता कि मैंने आपका ध्यान आपके उद्धरणों के पृष्ठ 41 के किसी अनुच्छेद की ओर आकर्षित किया है, और मैं आपको उसका संदर्भ देकर ही इस चर्चा को समाप्त करूंगा। यह आर. के. हैरिसन से है *पुराने नियम का परिचय,* जहां संख्याओं में जनगणना के आंकड़ों की व्याख्या के विभिन्न दृष्टिकोणों की अपनी चर्चा के समापन पर, वह कहते हैं, "पुराने नियम की संख्याओं को कम करने के इन प्रयासों में से कोई भी इसमें शामिल सभी डेटा के लिए संतोषजनक ढंग से जिम्मेदार होने में सक्षम नहीं है।" याद रखें जब मैंने अनुवाद के बारे में बात की थी*eleph* "सरदार" या "तम्बू समूह" के रूप में - आपको अभी भी अंत में संख्याओं के योग में समस्या है। इसलिए वर्तमान

में प्रस्तावित किसी भी समाधान के लिए सभी डेटा का संतोषजनक ढंग से निपटान करना कठिन है। “इस प्रकार दिए गए सुझावों को व्याख्या के उद्देश्य से समान रूप से संतुलित नहीं माना जा सकता है। यदि संख्याओं के संबंध में निकट पूर्वी स्रोतों से प्राप्त अन्य साक्ष्य आम तौर पर इस कार्रवाई में कोई मूल्य रखते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि पुराने नियम की संख्यात्मक पुष्टि वास्तविकता के कुछ आधार पर टिकी होगी जो पूर्वजों से काफी परिचित है, लेकिन जो आधुनिक विद्वानों के लिए अज्ञात है। ।” दूसरे शब्दों में, वहाँ कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते हैं। मैं इस मुद्दे को यहीं छोड़ दूँगा। यदि आप रुचि रखते हैं तो आप अपनी ग्रंथ सूची में कुछ संदर्भ देख सकते हैं - आगे बढ़ने के लिए वहां काफी चर्चा है। आगे बढ़ने से पहले इस पर कोई प्रश्न?

12. सी. लेवियों की गिनती की गई और उनके कर्तव्य सौंपे गए - संख्या 3:1-4:49

ठीक है, सी. 12 के अंतर्गत है: "लेवियों की गिनती की गई और उनके कर्तव्य सौंपे गए: संख्या 3:1-4:49।" यदि आप संख्या अध्याय 3 की ओर मुड़ते हैं, तो आप पद 1 की शुरुआत में देखेंगे और उसके बाद लेवियों के बारे में बात करेंगे। श्लोक 5 में जाएँ, “यहोवा ने मूसा से कहा, 'लेवी के गोत्र को ले आओ और उन्हें हारून याजक के पास उसकी सहायता के लिये प्रस्तुत करो। वे [लेवीय] तम्बू का काम करके मिलापवाले तम्बू में उसके और सारी मण्डली के लिये कर्तव्य निभाएं। उन्हें मिलापवाले तम्बू की सारी साज-सज्जा की देखभाल करनी है, और तम्बू का काम करके इस्राएलियों के दायित्वों को पूरा करना है।”

इसलिए, लेवियों को तम्बू की देखभाल करने का काम दिया गया है, और ऐसा करने में वे सभी इस्राएली परिवारों के पहलौठे के स्थान पर खड़े होंगे। पद 12 में आप देखिये, प्रभु ने कहा, “मैंने इस्राएलियों में से प्रत्येक इस्राएली स्त्री के पहिलौठे पुत्र के स्थान पर लेवियों को ले लिया है। लेवी मेरे ही हैं, क्योंकि सब पहिलौठे मेरे ही हैं।” अब याद रखें कि हमने सोने के बछड़े की घटना के समय लेवी जनजाति के मूसा के साथ खड़े होने के बारे में बात की थी। ऐसा करने के लिए उन्हें किसी तरह से आशीर्वाद दिया गया था। इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। उत्पत्ति में, उन्हें याकूब के आशीर्वाद में शाप दिया गया था जब उन्हें आदिवासी विरासत नहीं दी गई थी, लेकिन अब उन्हें इज़राइल में यह महत्वपूर्ण कार्य दिया गया है। लेकिन क्योंकि वे इस्राएल के परिवारों के प्रत्येक

पहलौठे के लिए खड़े हो सकते हैं, उन्हें भी गिना जाना था, और यही इस अध्याय में आता है और बहुत जल्दी आप एक जनगणना समस्या में वापस आ जाते हैं। आयत 14 कहती है, “यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, ‘लेवियों को उनके कुलों और कुलों के अनुसार गिनो। एक महीने या उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष की गिनती करो।'' ऐसा किया गया था, और आप श्लोक 39 में पाते हैं कि "मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा से लेवियों की कुल संख्या को उनके कुलों के अनुसार गिना, जिसमें एक महीने या उससे अधिक उम्र के हर पुरुष भी शामिल थे।" , 22,000 था।

अब जे. जे. डेविस के अंतर्गत पृष्ठ 44 पर अपने उद्धरण देखें। उनकी किताब में *बाइबिल अंकशास्त्र,* वह इस संख्या पर पहलौठे के संबंध में टिप्पणी करता है। वह वास्तव में संख्या 3 के श्लोक 40-49 पर टिप्पणी कर रहा है, क्योंकि यदि आप 22,000 लेवियों के बाद आगे बढ़ते हैं, तो श्लोक 43 कहता है, "एक महीने या उससे अधिक उम्र के पहले जन्मे पुरुषों की कुल संख्या, नाम से सूचीबद्ध, 22,273 थी।" दूसरे शब्दों में, लेवियों की तुलना में 273 ज्येष्ठ पुरुष अधिक थे! तो उसके लिए मुआवज़ा देना पड़ा, और आपने श्लोक 46 में पढ़ा कि 273 पहलौठे इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए, जो लेवियों की संख्या से अधिक थे, प्रत्येक के लिए पाँच शेकेल एकत्र किए जाएंगे। तो इस तरह यह सब संतुलित हो गया। लेकिन आइए जनजातियों के बीच पहले जन्मे बच्चे पर डेविस की टिप्पणी पर वापस आते हैं। “संख्याओं की पुस्तक में सामने आए सबसे जटिल मुद्दों में से एक जनजातियों के बीच पहले जन्मे बच्चों की कुल संख्या है। मुक्ति के उद्देश्य से की गई जनगणना के अनुसार, जनजातियों के सभी पहलौठे पुरुषों की कुल संख्या केवल 22,273 थी।” यह छंद 42 और 43 है। "यदि राष्ट्र की जनसंख्या दस लाख से अधिक पुरुषों की होती, जो संभवतः स्थिति होती - यदि 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के 603,550 पुरुष होते - तो 22,273 पर जो कार्य करेगा वह कुल योग का प्रतिनिधित्व करता है राष्ट्र के सभी पहलौठे, और 40 या 50 पुरुषों पर केवल एक ही पहलौठा होगा।” तो आप देख सकते हैं कि आप एक और समस्या में वापस आ गए हैं: वह एक बहुत बड़ा परिवार है। "इसका तात्पर्य यह है कि एक परिवार के प्रत्येक पिता ने 39 से 44 बेटों को जन्म दिया होगा या उनके अभी भी 39 से 44 बेटे होंगे, बेटियों की बात नहीं की जा रही है।" सामान्यतः जनसंख्या में पहले जन्मे बच्चों का अनुपात 1 से 4 है।

अब, अगले पैराग्राफ में डेविस ने ओल्ड टेस्टामेंट पर उस पुरानी क्लासिक कमेंटरी श्रृंखला

में सी. एफ. कील और फ्रांज डेलित्ज़ का उल्लेख किया है। वे इस समस्या को यह तर्क देकर संभालते हैं कि पहले जन्मे बच्चों की यह संख्या केवल 13 महीने के अंतराल में या निर्गमन और कानून दिए जाने के समय के बीच पैदा हुए लोगों की संख्या को दर्शाती है। उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर, ऐसा प्रतीत होता है कि एक वर्ष में लगभग 19,000 पहले बच्चे पैदा हुए थे, इस प्रकार यह संख्या ऐतिहासिक स्थिति की संभावनाओं के अनुरूप है। अब, यह एक दिलचस्प सुझाव है; लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि समस्या यह है कि यदि आप पाठ में श्लोक 43 पर वापस जाते हैं, तो इसमें क्या कहा गया है? इसमें कहा गया है कि एक महीने या उससे अधिक उम्र के पहले जन्मे पुरुषों की कुल संख्या 22,273 से कम है। इसमें यह नहीं कहा गया है कि "पिछले 12 से 13 महीनों में पैदा हुए पहले जन्मे नर।" यह इस्राएलियों के बीच पहिलौठे पुरुषों की कुल संख्या बताता है। इसलिए मुझे फिर से लगता है कि इन नंबरों के साथ कुछ ऐसा चल रहा है जिसे हम पूरी तरह से नहीं समझते हैं जहां तक कि उन्हें एक साथ रखने के तरीके और जिस भाषा का उपयोग किया जाता है। तो मैं इसे बस उस बड़े बिंदु में मोड़ दूँगा। मैं नहीं मानता कि हमारे पास पर्याप्त जानकारी है। मुझे नहीं लगता कि इससे आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि पाठ विश्वसनीय नहीं है; मुझे लगता है कि पाठ विश्वसनीय है, यह अभी पूरी तरह से समझा नहीं गया है। कोई प्रश्न?

डी। ईर्ष्या का नियम - संख्या 5:11-31

चलिए डी पर चलते हैं। यह "ईर्ष्या का नियम: संख्या 5:11-31" है। इस खंड के लिए शीर्षक "ईर्ष्या का कानून" वास्तव में एक निश्चित प्रकार की समस्या से निपटने की प्रक्रिया का वर्णन करने के बाद, खंड के अंत में श्लोक 29 से आता है। आप श्लोक 29 में पढ़ते हैं, "यह ईर्ष्या का नियम है," और यह आगे कहता है, "जब एक महिला भटक जाती है और अपने पति से विवाह करते हुए खुद को अशुद्ध कर लेती है, या जब एक पुरुष पर ईर्ष्या की भावना आ जाती है क्योंकि वह संदेह करता है उसकी पत्नी। पुजारी को इस कानून के प्रावधानों को लागू करना है। यदि आप श्लोक 14 पर वापस जाएं तो आपको इसका विवरण मिलेगा कि यह किससे निपट रहा है। मैं आयत 11 से पढ़ना शुरू करता हूँ। “तब यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएलियों से कह, कि यदि किसी पुरूष की स्त्री भटककर दूसरे पुरूष के साथ सोकर उस से विश्वासघात करे, और यह बात किसी से छिपी हुई हो, उसका

पति, और उसकी अशुद्धता का पता नहीं चल पाता है (क्योंकि उसके खिलाफ कोई गवाह नहीं है, और वह इस कृत्य में नहीं पकड़ी गई है)।"'' और फिर आप देखते हैं कि श्लोक 14 में इस मुद्दे का वर्णन किया गया है, "और यदि ईर्ष्या की भावनाएं उस पर हावी हो जाती हैं पति, और वह अपनी पत्नी पर संदेह करता है और वह अशुद्ध है, या यदि वह ईर्ष्यालु है और वह उस पर संदेह करता है, भले ही वह अशुद्ध नहीं है," तो उसे कुछ चीजें करनी हैं और यह ईर्ष्या का नियम है।

यह उस प्रक्रिया की जानकारी देता है जिसका उस तरह के मामले में पालन किया जाना है। यह एक ऐसा मामला है जहां कोई सबूत नहीं है, और दो संभावनाएं हैं: एक महिला ने अपने पति के खिलाफ पाप किया है, वह ईर्ष्यालु हो जाता है लेकिन उसके पास कोई सबूत नहीं है, लेकिन वह दोषी है; या ऐसा मामला जहां एक पुरुष को संदेह है कि उसकी पत्नी ने पाप किया है, और फिर कोई सबूत नहीं है, लेकिन महिला निर्दोष है। तो, यह एक ऐसा मामला है जहां कोई सबूत नहीं है, लेकिन पति को संदेह है। ऐसे मामले में यहां एक प्रक्रिया बताई गई है जिसका पालन किया जाना है। यह प्रक्रिया कथित अपराध से निपटने के लिए नहीं है। व्यभिचार के लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए पहले से ही मौत की सज़ा थी। लेकिन यह प्रक्रिया महिला की बेगुनाही या अपराध से निपटने के लिए है, ताकि उस ईर्ष्या को दूर किया जा सके जो निराधार थी। यह प्रदर्शन की प्रक्रिया के साथ बेवफाई को रोकने वाला भी था।

अब, प्रक्रिया क्या है? आयत 15 कहती है कि यदि ऐसा कोई मामला है, तो पति को अपनी पत्नी को याजक के पास ले जाना चाहिए: “उसे उसकी ओर से एपा का दसवां हिस्सा जौ का आटा भी चढ़ाना चाहिए। उसे उस पर तेल या धूप नहीं डालना चाहिए, क्योंकि वह ईर्ष्या के लिये अन्नबलि, और दोष की ओर ध्यान दिलाने के लिये स्मरण दिलाने वाली भेंट है।" तो, श्लोक 15 में एक भेंट लाई जानी है। फिर श्लोक 16 से 18 में पुजारी महिला को भगवान के सामने रखता है और भेंट उसके हाथ में रखता है। श्लोक 16 कहता है, “याजक उसे लाएगा और उसे प्रभु के सामने खड़ा करेगा। तब वह मिट्टी के घड़े में कुछ पवित्र जल ले, और निवास के फर्श की कुछ धूल उस जल में डाल दे। जब याजक उस स्त्री को यहोवा के साम्हने खड़ा करे, तब वह उसके बाल खोलकर उसके हाथों में स्मरण-बलि, अर्यात् ईर्ष्या के लिये अन्नबलि, रखे, और वह स्वयं कड़वा जल जो शाप लाता है, हाथ में रखे।

इसलिए वह स्त्री को प्रभु के सामने खड़ा करता है, उसके हाथ में प्रसाद रखता है, और फिर श्लोक 19 से 22 में स्त्री शपथ लेती है जिसका उपयोग प्रभु या तो उसे आशीर्वाद देने के लिए करते हैं या उसकी बेगुनाही या उसके अपराध के अनुसार उसे शाप देने के लिए करते हैं। पद 19, "तब याजक उस स्त्री को शपथ खिलाकर कहे, 'यदि कोई अन्य पुरुष तेरे साथ न सोए, और तू अपने पति से ब्याह करके भटककर अशुद्ध न हुई हो, तो यह कड़वा जल जो शाप लाता है तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा. परन्तु यदि तू अपने पति के साथ विवाह करके भटक गई है, और अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरुष के साथ सोकर अपने आप को अशुद्ध कर लिया है - तो यहां पुजारी शपथ के इस शाप के तहत एक देता है - क्या प्रभु आपके लोगों को शाप देने के लिए बुला सकता है और जब वह ऐसा करता है तो आपको निंदा कर सकता है। आपकी जांघ बेकार हो जाएगी और आपका पेट सूज जाएगा। यह जल, जो शाप लाता है, तेरे शरीर में प्रवेश कर जाए, और तेरा पेट फूल जाए, और तेरी जांघ सूख जाए।" अब वह जल वह जल है जो तम्बू के फर्श की धूल के साथ मिश्रित है।

तो, महिला धूल और पानी के इस मिश्रण को पीती है और परिणाम वर्णित के अनुसार होगा। यदि वह निर्दोष होती तो कुछ नहीं होता, यदि वह दोषी होती तो उसकी जाँघ बर्बाद हो जाती और उसका पेट सूज जाता। मुझे नहीं लगता कि यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण है कि धूल और पानी का मिश्रण, जैसा कि यहां वर्णित है, प्राकृतिक तरीके से उस तरह का परिणाम लाएगा। यह पूरी तरह से एक शारीरिक प्रभाव नहीं है. इसमें ईश्वर का हस्तक्षेप शामिल है जिसने निर्दिष्ट उद्देश्य के लिए इस प्रक्रिया को मंजूरी दी है - महिला की बेगुनाही या अपराध का निर्धारण करने के लिए।

मुसीबत से गुजरना

अब यह कहने के बाद, यह प्रक्रिया कुछ हद तक - पूरी तरह से नहीं, लेकिन कुछ हद तक - जैसी होती है - जिसे "परीक्षा द्वारा परीक्षण" के रूप में जाना जाता है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी उस वर्णनात्मक शब्द के बारे में सुना है - "परीक्षा द्वारा परीक्षण।" अनेक लोगों द्वारा लंबे समय तक परीक्षण दर परीक्षण का एक लंबा इतिहास रहा है। यदि आप हम्मूराबी (लगभग 1700 ईसा पूर्व) की संहिता पर जाएं, तो कानून 132 में लिखा है, "यदि किसी नागरिक की पत्नी पर किसी अन्य पुरुष के कारण उंगली उठाई गई है, लेकिन वह किसी अन्य पुरुष के साथ झूठ बोलते हुए नहीं पकड़ी गई

है" -इन दूसरे शब्दों में, फिर से, कोई सबूत नहीं - "अपने पति की खातिर वह खुद को नदी में फेंक देगी।" बेशक सिद्धांत यह था कि अगर वह दोषी है तो वह डूब जाएगी। यदि वह निर्दोष है तो जीवित रहेगी। यह "परीक्षा द्वारा परीक्षण" है। विश्वकोश कहता है, “ऑर्डियल द्वारा परीक्षण दैवीय हस्तक्षेप द्वारा कानूनी प्रमाण है। ऐसे मामले में जहां सामान्य साक्ष्य मौजूद नहीं है।” यदि आप इसके इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि इसमें अक्सर पानी या आग की अग्निपरीक्षा दी जाती है। कभी-कभी लोगों को आग के गर्म अंगारों के पार चलना पड़ता था, और फिर समय के साथ जलने की गंभीरता का निरीक्षण किया जाता था। यदि वे गंभीर रूप से जले हुए थे तो यह अपराध बोध का संकेत होगा; यदि ऐसा नहीं होता तो यह निर्दोषता का संकेत होता। किसी को लौ में हाथ डालने के लिए कहा जा सकता है और इसी तरह की जांच से अपराध या निर्दोषता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

अक्सर इस प्रक्रिया की तुलना अग्नि परीक्षा से की जाती है जो यूरोप में मध्य युग में आम थी। जूरी प्रणाली से पहले इंग्लैंड में यह आम बात थी। लेकिन मुझे लगता है कि इसमें एक महत्वपूर्ण अंतर है। मैंने कहा कि यह कुछ हद तक अग्नि-परीक्षा के समान है, लेकिन ध्यान दें कि इसमें अंतर है। जैसा कि आम तौर पर अभ्यास किया जाता है, परीक्षण द्वारा परीक्षण में, निर्दोष साबित होने तक अपराध की धारणा होती है। दूसरे शब्दों में, यदि आप अंगारों पर चलेंगे, तो संभवतः आप जल जायेंगे। इसलिए, आम तौर पर अग्निपरीक्षा में अपराध की धारणा होती है जब तक कि कोई निर्दोष साबित न हो जाए, यानी, जब तक कि व्यक्ति को आग या पानी से बचाया न जाए। लेकिन यहां रस्म वाकई उलट है. जब तक दोषी साबित न हो जाए, उसे निर्दोष माना जाता है। यहां खतरा जीवन के लिए खतरा या ऐसा कुछ नहीं है जिससे आप चोट लगने की उम्मीद कर सकें, यह सिर्फ धूल मिला हुआ पानी पीने का है। यदि कुछ समय के बाद जांघ सड़ जाए या पेट फूल जाए तो आप दोषी माने जाएंगे। इसलिए मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण अंतर है।

ऐसा लगता है कि भगवान ने इस तरह की जगह पर, ऐसे सामाजिक संदर्भ में पालन की जाने वाली एक प्रक्रिया का आदेश दिया है जहां महिलाएं आम तौर पर वंचित थीं। यह प्रावधान वास्तव में कई मायनों में महिला के हित में है। यह एक संदिग्ध पति को अपना मामला स्थापित करने या आरोपों और संदेह से दूर रहने के लिए मजबूर करता है, और माना जाता है कि वह ऐसा नहीं कर सकता।

इ। नाज़ीर का कानून - संख्या 6:1-21

ठीक है, चलो ई पर चलते हैं। "नाज़ीर का कानून: गिनती 6:1-21।" इसके लिए शीर्षक, आपको श्लोक 13 और श्लोक 21 में मिलेगा। आप संख्या 6 के श्लोक 13 में ध्यान दें, "अब यह नाज़ीर का कानून है," और श्लोक 21 में, "यह नाज़ीर का कानून है।" ” नाज़ीर के कानून का उद्देश्य क्या था? नाज़ीर के कानून ने किसी पुरुष या महिला के लिए, जो पुरोहिताई का नहीं था, प्रभु के लिए एक प्रकार के विशेष अभिषेक का प्रावधान किया, और उन्हें सीमित समय के लिए खुद को प्रभु से अलग करने में सक्षम बनाया। यह कुछ ऐसा था जो अनिवार्य नहीं था, बल्कि स्वैच्छिक था। यह किसी प्रकार का अद्वैतवाद या तपस्या नहीं था। इसने कुछ योग्यताओं या अपवादों के साथ समाज में सामान्य जीवन की अनुमति दी। तो आप संख्या 6 के पहले पद में पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'इस्राएलियों से बात करो और उनसे कहो, "यदि कोई पुरुष या स्त्री कोई विशेष मन्नत मानना चाहे, अर्थात् अलग होने की प्रतिज्ञा, नाज़ीर,'' उसे कुछ चीजें करनी होंगी। मैं कह सकता हूँ कि "नाज़िराइट" शब्द मूल से आया है *देखना*(*nzr*), जिसका अर्थ है "समर्पित करना या अलग करना।" तो उस शब्द के मूल अर्थ पर एक नाटक है - यह भगवान से अलग होने की एक विशेष प्रतिज्ञा है।

नाज़ीर को जो तीन चीज़ें नहीं करनी थीं, वे ऐसी चीज़ें थीं जो अपने आप में ग़लत नहीं थीं, लेकिन ऐसी चीज़ें थीं जो प्रभु के प्रति समर्पण की इस विशेष अवधि को चिह्नित करती थीं। पहली बात, श्लोक 3 और 4, अंगूर से आने वाली हर चीज़ से दूर रहना था। “उसे शराब और अन्य किण्वित पेय से दूर रहना चाहिए, और शराब या किसी अन्य किण्वित पेय से बना सिरका नहीं पीना चाहिए। उसे अंगूर का रस नहीं पीना चाहिए, या अंगूर या किशमिश नहीं खाना चाहिए। जब तक वह नाज़ीर है, उसे अंगूर की बेल से निकलने वाली कोई भी चीज़ नहीं खानी चाहिए, यहाँ तक कि बीज या छिलका भी नहीं।”

दूसरी बात यह थी कि भगवान के प्रति समर्पण के प्रतीक के रूप में अपने बालों को बढ़ने दिया जाए। श्लोक 5 में कहा गया है, ''अलगाव की प्रतिज्ञा की पूरी अवधि के दौरान उसके सिर पर कोई उस्तरा नहीं चलाया जा सकता है। उसे तब तक पवित्र रहना चाहिए जब तक कि यहोवा से उसके अलग रहने का समय पूरा न हो जाए; उसे अपने सिर के बाल लम्बे करने चाहिए।”

और तीसरी बात, श्लोक 6 और 7, उसे किसी भी शव के संपर्क में नहीं आना था। “भगवान से अलग होने की अवधि के दौरान उसे किसी शव के पास नहीं जाना चाहिए। चाहे उसका पिता, वा माता, वा भाई, वा बहिन भी मर जाए, तौभी वह उनके कारण अपने आप को अशुद्ध न करे, क्योंकि परमेश्वर से अलग होने का चिन्ह उसके सिर पर है।" तो ये तीन चीजें हैं जो नाज़ीर को करनी थीं। मन्नत के अंत में, विभिन्न बलिदान चढ़ाए जाने थे, सिर मुंडवाना था और बाल वेदी पर जलाना था, और उस मन्नत की अवधि समाप्त हो गई थी। तो यह नाज़ीर का कानून है।

मैं शायद यहां टिप्पणी कर सकता हूं; यदि आप ईसाई चर्च के इतिहास पर नज़र डालें तो आप शायद जानते होंगे कि रोमन कैथोलिक चर्च में लोगों को, विशेषकर पुरोहिती के लिए, ब्रह्मचर्य, गरीबी, शुद्धता और आज्ञाकारिता की प्रतिज्ञा लेने की एक लंबी परंपरा है। ऐसा अपने पूरे जीवन भर करें। उस प्रणाली के कारण बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। विशेष रूप से मठवासी व्यवस्था के साथ, जिसके लिए मुझे लगता है कि बाइबिल का कोई समर्थन नहीं है। ब्रह्मचर्य विवाह से अधिक पवित्र स्थिति नहीं है, और सामान्य सामाजिक संभोग, सगाई और समाज और समुदाय में भागीदारी से हटना, कुछ ऐसा नहीं है जो समाज में भागीदारी की तुलना में सच्चे धर्म में आध्यात्मिक विकास के लिए अधिक अनुकूल है। तो, यह दिलचस्प है कि इस विशेष व्रत में, एक व्यक्ति इसे ले सकता है और यह स्वैच्छिक और अस्थायी है। सैमसन और सैमुअल जैसे विशेष मामलों को छोड़कर यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे जीवन भर के लिए लगाया जाता है। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसमें पूरी तरह से पूरा जीवन शामिल हो और यह ऐसा कुछ नहीं है जो उन्हें समुदाय में सामान्य जीवन से पूरी तरह से अलग कर दे।

मुझे यकीन नहीं है कि यह बताता है कि प्रतिज्ञा समाप्त करने में कितना समय लगता है। ऐसा नहीं लगता कि इसे समाप्त करने में इतना लंबा समय लगेगा, इसलिए हो सकता है कि कोई व्यक्ति ऐसा कर सके। मुझे लगता है कि बाद में यहूदी धर्म में लंबाई निर्दिष्ट करने का प्रयास किया गया था - यह एक महीने या छह सप्ताह या दो महीने या कुछ और की अवधि होगी - लेकिन कानून में ही, यह निर्दिष्ट नहीं है।

एफ। वेदी के समर्पण पर राजकुमारों की भेंट - संख्या 7:1-89

लेकिन चलिए एफ पर चलते हैं। मैं यहाँ बस कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। एफ। है, "वेदी के समर्पण पर राजकुमारों की भेंट: गिनती 7:1-89।" मैं केवल यह उल्लेख करना चाहूँगा कि यह पेंटाटेच में सबसे लंबा अध्याय है। यह कितने श्लोक हैं? 89 श्लोक. अब यदि आप इस पर नज़र डालें तो आपको यह बहुत ही दोहराव वाला लगेगा। यह उस भेंट का वर्णन करता है जो तम्बू के लिए वेदी के समर्पण के अवसर पर प्रत्येक जनजाति के एक प्रतिनिधि द्वारा लाई जाती है। उदाहरण के लिए, श्लोक 24 को देखें: "तीसरे दिन, हेलोन का पुत्र एलीआब, जो जबूलून के लोगों का प्रधान था, अपनी भेंट ले आया।" अत: जबूलून के गोत्र का प्रतिनिधि एक भेंट लाता है। भेंट का वर्णन छंद 25 से 29 में किया गया है। "उसकी भेंट एक सौ तीस शेकेल चांदी की एक थाली, और सत्तर शेकेल चांदी का एक कटोरा, दोनों पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार, तेल से सने हुए मैदे से भरे हुए थे।" अन्नबलि; दस शेकेल सोने का एक परात धूप से भरा हुआ; होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक नर भेड़ का बच्चा; पापबलि के लिये एक बकरा; और मेलबलि के लिये दो बैल, और पांच मेढ़े, और पांच बकरे, और एक एक वर्ष के पांच नर मेम्ने बलि किए जाएं। यह हेलोन के पुत्र एलीआब की भेंट थी।”

अब यदि आप अन्य जनजाति के प्रतिनिधियों की प्रत्येक पेशकश को देखें, तो वे सभी समान हैं। तो अध्याय बहुत दोहराव वाला हो जाता है और आप पूछ सकते हैं, "क्या मतलब है?" मुझे लगता है, यह हमें जो बता रहा है वह यह है कि भगवान को अपने प्रत्येक व्यक्ति और उनके प्रसाद में रुचि है, भले ही वे प्रसाद मूल रूप से एक जैसे ही हों। भगवान व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक व्यक्ति और इनमें से प्रत्येक जनजाति में रुचि रखते हैं और वे क्या लाते हैं। तो यह रिकार्ड किया गया है, एक के बाद एक चढ़ावा चढ़ाना।

जी। मिस्र छोड़ने के बाद दूसरा फसह--संख्या 9:1-14

चलिए जी पर चलते हैं. "मिस्र छोड़ने के बाद दूसरा फसह: गिनती 9:1-14।" अध्याय 9 के श्लोक 1 में एक समय पदनाम है: “उनके मिस्र से निकलने के बाद दूसरे वर्ष के पहले महीने में, प्रभु ने सिनाई के रेगिस्तान में मूसा से बात की। उसने कहा, 'इस्राएलियों को नियत समय पर फसह मनाने दो। इस महीने के चौदहवें दिन गोधूलि के समय इसे मनाना।'' अब उस समय पर ध्यान दें:

दूसरे वर्ष का पहला महीना। संख्या 1:1 पर वापस जाएँ। संख्या 1:1 कहता है कि "प्रभु ने दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन मूसा से बात की।" 1:1 में दूसरे वर्ष के दूसरे महीने का पहला दिन, लेकिन 9:1 में यह दूसरे वर्ष का पहला महीना है। तो यह वास्तव में जनगणना लेने के बारे में अध्याय एक में दिए गए निर्देशों से पहले की बात है।

लेकिन इस समय क्या होता है कि उन्होंने ऐसा दूसरे वर्ष के पहले महीने में किया, लेकिन आप श्लोक 6 में निम्नलिखित पढ़ते हैं: "उनमें से कुछ उस दिन फसह का जश्न नहीं मना सके क्योंकि वे एक मृत के कारण औपचारिक रूप से अशुद्ध थे शरीर। तब वे मूसा और हारून के पास आकर मूसा से कहने लगे, हम लोय के कारण अशुद्ध हो गए हैं, परन्तु हम नियत समय पर अन्य इस्राएलियों के साथ यहोवा की भेंट चढ़ाने से क्यों रोके जाएं?'' दूसरे शब्दों में, वे वे फसह का पालन करने के लिए बाध्य हैं लेकिन वे औपचारिक रूप से अशुद्ध हैं इसलिए वे फसह का पालन नहीं कर सकते हैं। यहां आपके सामने परस्पर विरोधी नैतिकता की समस्या है। सभी इस्राएलियों को फसह का पालन करना था अन्यथा वे परमेश्वर के लोगों से अलग कर दिये जायेंगे। पद 13 पर जाएँ: “यदि कोई व्यक्ति जो औपचारिक रूप से शुद्ध है और यात्रा पर नहीं है, फसह मनाने में विफल रहता है, तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए क्योंकि उसने नियत समय पर प्रभु की भेंट नहीं पेश की, वह व्यक्ति सहन करेगा उसके पाप के परिणाम।" लेकिन यदि आप लेविटिकस में मोज़ेक कानून पर वापस जाते हैं, तो जो कोई भी मृत शरीर को छूता था वह अशुद्ध था और उसे फसह का पालन करने से प्रतिबंधित किया गया था। तो ऐसे में आप क्या करते हैं? तुम्हें इसका पालन करना चाहिए, परंतु तुम अशुद्ध हो, इसलिए तुम ऐसा नहीं कर सकते।

ये लोग मूसा के पास आकर कहते हैं, "हम क्या करें?" और मूसा नहीं जानता. पद 8 में, मूसा कहता है, "जब तक मैं न जान लूं, तब तक ठहरो, कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है!" फिर आपने पद 9 में पढ़ा कि प्रभु ने मूसा से क्या कहा। वह कहता है, “इस्राएलियों से कहो, कि जब तुम में से या तुम्हारे वंश में से कोई किसी शव के कारण अशुद्ध हो, या यात्रा पर गया हो, तब भी वे यहोवा का फसह मना सकते हैं। वे इसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन मनायें।” दूसरे शब्दों में, विकल्प के तौर पर बाद की तारीख दी गई है। मुझे लगता है कि आप इसमें नागरिक और औपचारिक कानून की प्रकृति के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण देखते हैं। मुझे नहीं लगता कि इस कानून

को संकीर्ण कानूनी तरीके से देखने का इरादा था; यानी, यह पूरी तरह से अटल और अपरिवर्तनीय चीज़ नहीं है।

अब मुझे लगता है कि यीशु ने मरकुस 2:27 में जो कहा वह उसी बिंदु पर आता है। यीशु ने कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए।" यह कानून मानव जाति के लाभ के लिए भगवान द्वारा दिया गया था; यह दूसरा तरीका नहीं है। प्रभु यहां जो करते हैं वह इन दोनों आवश्यकताओं में से सर्वोत्तम को बनाए रखने का एक तरीका प्रदान करता है: आपको फसह का पालन करना चाहिए, जब आप अशुद्ध हों तो आपको वहां नहीं जाना चाहिए, वास्तव में समझौता किए बिना। लेकिन अपवादों और झगड़ों के लिए प्रावधान किया गया है। इसलिए, नियमित फसह के एक महीने बाद दूसरा फसह आयोजित किया जा सकता है ताकि उन लोगों को समायोजित किया जा सके जो अशुद्ध होने या यात्रा पर होने के कारण पहले में भाग नहीं ले सके।

एच। दिशा और मार्गदर्शन के लिए ईश्वरीय प्रावधान, इज़राइल अब कनान देश की ओर अपनी यात्रा पर सिनाई छोड़ना शुरू कर रहा है

एच. 12 से कम: "दिशा और मार्गदर्शन के लिए दिव्य प्रावधान, इज़राइल अब कनान देश की ओर अपनी यात्रा पर सिनाई छोड़ना शुरू कर रहा है।" दो प्रावधान किए गए हैं: संख्या 9:15-23 में आपके पास बादल और आग का स्तंभ है। गिनती 9:15 में आप पढ़ते हैं, “पवित्र निवास के दिन, साक्षीपत्र का तम्बू खड़ा किया गया, और सांझ से भोर तक बादल उस पर छाया रहा। तम्बू के ऊपर का बादल आग के समान दिखाई देता था, और वैसा ही होता रहा। बादल ने उसे ढँक लिया, और रात को वह आग के समान दिखाई देने लगी। जब जब बादल तम्बू पर से उठता तब इस्राएली प्रस्थान करते थे। जब जब बादल थम जाता तब तब इस्राएली डेरे डालते थे। यहोवा की आज्ञा से इस्राएलियों ने प्रस्थान किया, और उसी की आज्ञा से उन्होंने डेरे खड़े किए। जब तक बादल तम्बू पर छाया रहा, तब तक वे छावनी में रहे।” तो, इसके बाकी भाग में वर्णन किया गया है कि इस्राएलियों को उनकी यात्रा पर ले जाने के लिए यह कैसे काम करेगा। दूसरा प्रावधान संख्या 10:1-10 में है और वह जनजातियों के आंदोलनों के समन्वय के लिए चांदी की तुरही प्रदान करने का प्रावधान है। प्रभु ने

कहा, “चाँदी की दो तुरहियाँ बनाओ, और उनका उपयोग समुदाय को इकट्ठा करने और शिविर को रवाना करने के लिए करो। जब दोनों को बजाया जाएगा, तो पूरा समुदाय इकट्ठा हो जाएगा,'' इत्यादि। तो, लोगों के मार्गदर्शन के लिए ये दो प्रावधान हैं जैसा कि वे निर्धारित करते हैं।

लंघन ई. एफ। और जी.

मैं अनुभाग ई., एफ., और जी को छोड़ने जा रहा हूँ। हमारी कक्षा चर्चा के लिए आपकी रूपरेखा पर। आप देखेंगे कि ई. "सिनाई से मोआब के मैदान तक: संख्या 10-22।" एफ. "बालाम घटना: संख्या 22-25" है। यहीं पर मोआब के राजा बालाक ने इस्राएलियों को शाप देने के लिये बुतपरस्त भविष्यवक्ता बिलाम को काम पर रखा; परन्तु उसने इस्राएलियों को श्राप देने के बजाय आशीर्वाद देना समाप्त कर दिया। मैं उस पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, इसलिए मैं एक मिनट में उस पर वापस आऊंगा। मैं ई., एफ. पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ। या जी. जी "कनान में प्रवेश की तैयारी: संख्या 26-36" है जहां आपके पास जंगल में भटकने की उस अवधि के अंत में एक नई जनगणना और कुछ चीजों की चर्चा है।

एफ। बालाम दैवज्ञ और दिव्य राजत्व

मैं बिलाम की वाणी पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता था। मैं ऐसा एक विशिष्ट चीज़ के संबंध में करना चाहता हूं जो उन भविष्यवाणियों में शामिल है, और वह इसराइल में राजत्व के उदय का संदर्भ है। गौर करें गिनती 23:21 में बिलाम क्या कहता है: “याकूब में कोई दुर्भाग्य नहीं देखा जाता, इस्राएल में कोई दुःख नहीं देखा जाता। उनका परमेश्वर यहोवा उनके संग है, राजा की जयजयकार उनके बीच में है।” अब, आप बहस कर सकते हैं कि "राजा की चिल्लाहट" का तात्पर्य वहां क्या है। क्या राजा स्वयं ईश्वर है - "प्रभु उनका ईश्वर उनके साथ है, राजा की पुकार" - क्या यह यहोवा को दिव्य राजा के रूप में पहचानने की पुकार है, या यह एक मानव राजा है?

संख्या 24:17 को देखें, जहां बिलाम अपने चौथे दैवज्ञ में कहता है, "मैं उसे देखता हूं, परन्तु अभी नहीं, मैं उसे देखता हूं, परन्तु निकट नहीं, याकूब में से एक तारा निकलेगा, इस्राएल में से एक राजदण्ड निकलेगा।" अब राजदंड राजसत्ता का प्रतीक है। “वह मोआब के माथे को, शेत के सब पुत्रों की सब खोपड़ियों को कुचल डालेगा, एदोम जीत लिया जाएगा; सेईर, उसका शत्रु, जीत लिया

जाएगा, लेकिन इस्राएल मजबूत हो जाएगा। याकूब में से एक शासक निकलेगा और नगर के बचे हुए लोगों को नष्ट कर देगा।" मुझे लगता है कि श्लोक 17-19 में आपके पास एक भविष्यसूचक कथन है जो डेविड के समय में अपनी पूर्ति पाता है। दाऊद वह राजदण्ड था जो इस्राएल से निकला, दाऊद ने मोआब और एदोम को कुचल डाला। 2 शमूएल 8 को देखें - इसमें दाऊद की सभी विजयों की सूची है और उनमें मोआब और एदोम भी शामिल हैं। मैं बस आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि बालाम दैवज्ञ में पहले से ही राजत्व की आशा की गई है। जब हम 1 और 2 सैमुअल में पहुँचते हैं तो हम इज़राइल में राजत्व का उदय देखेंगे। इस्राएल में राजत्व का उदय बिना किसी पूर्व संकेत के नहीं होता कि एक समय आएगा जब इस्राएल में राजत्व स्थापित हो जाएगा। वास्तव में, यदि आप इब्राहीम के समय में वापस जाएँ, तो प्रभु कहते हैं, "इब्राहीम के वंशजों में राजा उत्पन्न होंगे।" व्यवस्थाविवरण 17 में, जिसे "राजा का कानून" कहा जाता है - यह बताता है कि जब आप एक राजा की स्थापना करते हैं, तो राजा क्या करेगा। अतः राजत्व अपेक्षित है; अपने लोगों के लिए एक राजा रखना परमेश्वर का उद्देश्य था। इसलिए मैं बिलाम की वाणी पर वह टिप्पणी करना चाहता था।

एच। मूसा के अंतिम दिन

1. व्यवस्थाविवरण की पुस्तक

एक। व्यवस्थाविवरण का नाम

मैं आगे बढ़ना चाहता हूं, एच पर छोड़ें। जो "मूसा के अंतिम दिन" हैं, दो उप-बिंदुओं में: एक है व्यवस्थाविवरण की पुस्तक और दूसरी है मूसा की मृत्यु। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के अंतर्गत तीन उप-शीर्षक हैं, जिनमें से पहला "नाम" है जो पेंटाटेच या टोरा की अंतिम पुस्तक है। जैसा कि आपने नोट किया है, हिब्रू परंपरा में शीर्षक पुस्तक की पहली पंक्तियों के शब्दों से लिया गया है। इस मामले में, जिस शीर्षक से हम परिचित हैं वह हिब्रू परंपरा से नहीं बल्कि सेप्टुआजेंट से है। हिब्रू परंपरा में, शीर्षक व्यवस्थाविवरण 1:1 से लिया गया है: "ये वे शब्द हैं जो मूसा ने जॉर्डन के पार इसराइल से कहे थे।" यहूदी परंपरा में "ये शब्द हैं" शीर्षक है। लेकिन व्यवस्थाविवरण के लिए हम जिस शीर्षक से परिचित हैं वह वास्तव में व्यवस्थाविवरण 17:18 के अनुवाद से लिया गया है। मैंने कुछ मिनट पहले उल्लेख किया था कि व्यवस्थाविवरण 17:18 को "राजा का कानून" भी कहा जाता

है, जिसमें बताया गया है कि जब इसराइल में राजत्व का उदय हुआ तो राजा को कैसे कार्य करना था। यह पद, व्यवस्थाविवरण 17:18, उस "राजा की व्यवस्था" से एक पद है। इसमें कहा गया है, "जब वह [अर्थात, राजा] अपने राज्य का सिंहासन लेता है, तो उसे अपने लिए एक पुस्तक पर लिखना होता है, [एनआईवी कहता है] इस कानून की एक प्रति, पुजारी से ली गई है जो कि हैं लेवी।" तो आप वहां हिब्रू पाठ में देखते हैं "उसे अपने लिए कानून की एक प्रति लिखनी है," जिसका सेप्टुआजेंट में अनुवाद किया गया है "उसे [शाब्दिक रूप से] यह दूसरा कानून लिखना है।" अब*Mishnah* हिब्रू में यह एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ प्रतिलिपि या दूसरा हो सकता है। और आप देखते हैं कि सेप्टुआजेंट ने इसका अनुवाद "दूसरे कानून" के रूप में किया है। मुझे लगता है कि यह गलत अनुवाद है. और यह पुस्तक का अंग्रेजी शीर्षक बन गया है: "*व्यवस्थाविवरण,*" जिसका अर्थ है "दूसरा कानून।" यह ग़लत अनुवाद है और ग़लतफ़हमी की संभावना बनी रहती है। मुझे लगता है कि इसे एक अर्थ में सही ढंग से समझा जा सकता है, और यह मददगार भी हो सकता है, लेकिन इसमें ग़लतफ़हमी की संभावना बनी रहती है।

आम तौर पर, मुझे लगता है कि इसे हमेशा गलत तरीकों से समझा गया है। यदि आप इसका अनुवाद "दूसरा कानून" करते हैं, तो आपको यह विचार आ सकता है कि यह दूसरा कानून है जो पहले कानून से भिन्न है। पहला कानून सिनाई में दिया गया था। यह वह कानून है जो चालीस साल बाद जंगल में भटकते हुए बड़ी हुई नई पीढ़ी को दिया गया। याद कीजिए जब वे गिनती की किताब के बीच में विश्वास की कमी के कारण कादेश बर्निया में थे। जासूस बाहर गए और नकारात्मक रिपोर्ट के साथ वापस आए और कहा, "ऐसा करने का कोई तरीका नहीं है।" तो दूसरे कानून को ऐसे कानून के रूप में समझा जा सकता है जो सिनाई में दिए गए कानून से भिन्न है।

इसमें सच्चाई का एक तत्व है क्योंकि यदि आप व्यवस्थाविवरण में कानून के निर्माण को करीब से देखते हैं और इसकी तुलना एक्सोडस में कानून के निर्माण से करते हैं, तो आप पाएंगे कि कुछ मामलों में मामूली अंतर हैं। दस आज्ञाओं में से कुछ को निर्गमन 20 की तुलना में व्यवस्थाविवरण 5 में काफी अलग तरीके से लिखा गया है। लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि यह एक दूसरा कानून है जो किसी भी तरह से असंगत है या सिनाई में दिए गए कानून के विपरीत है। यह मूसा द्वारा अगली पीढ़ी के लोगों के लिए कानून का एक पुनर्कथन है जो

सिनाई में दिए गए कानून के अनुरूप और सामंजस्यपूर्ण है। यह इस अर्थ में दूसरा कानून नहीं है कि यह सिनाई में दी गई सामग्री से भिन्न सामग्री है। तो यह एक तरीका है जिससे इसे गलत समझा जा सकता है।

दूसरा तरीका जिससे इसे गलत समझा जा सकता है वह यह है कि शीर्षक से पता चलता है कि यह केवल पहले नियम की पुनरावृत्ति है। यदि ऐसा है, तो हमें व्यवस्थाविवरण पर इतना अधिक ध्यान क्यों देना चाहिए? अगर यह केवल पहले दी गई बातों की पुनरावृत्ति है तो लेविटिकस और नंबर्स को क्यों न पढ़ा जाए? हमारे पास यह पुस्तक क्यों है?

यह दिलचस्प है कि व्यवस्थाविवरण के सामरी पेंटाटेच पाठ के साथ-साथ व्यवस्थाविवरण के मृत सागर स्क्रॉल में आप निर्गमन और संख्याओं के नियमों के शब्दों के साथ व्यवस्थाविवरण को सुसंगत बनाने के प्रयासों को देखते हैं। इसलिए दोनों के बीच मतभेदों को जानबूझकर कम किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि मैसोरेटिक हिब्रू पाठ की तुलना में मृत सागर स्क्रॉल पाठ और सामरी पाठ में शब्दों को एक साथ लाने का प्रयास किया गया है। लेकिन अधिक सटीक अनुवाद केवल इस कानून की "एक प्रति" है न कि "दूसरा कानून।" राजा को इस कानून की एक प्रति लिखनी थी। सेप्टुआजेंट ने इसका इस तरह अनुवाद क्यों किया और यह पुस्तक का शीर्षक क्यों बन गया यह एक खुला प्रश्न है। यदि आप व्यवस्थाविवरण 17:18 पर वापस जाते हैं, तो भी आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं, "कानून क्या है?" "राजा को इस कानून की एक प्रति अपने लिए लिखनी होगी।" कौन सा कानून? क्या यह सिर्फ राजा का कानून है जो बताता है कि राजा को शासन कैसे करना है या राजा के रूप में अपना काम कैसे करना है? या क्या "यह कानून" संपूर्ण पेंटाटेच है? या यह सिर्फ व्यवस्थाविवरण की किताब है? वहां तीन विकल्प हैं. मुझे लगता है कि यह व्यवस्थाविवरण की पूरी किताब है, मोआब के मैदानों में मूसा द्वारा राजा के रूप में जिम्मेदारियों को संभालने के दौरान उसका मार्गदर्शन करने के लिए कानून के इस पुनर्कथन की एक प्रति मेरे पास है। शीर्षक की इस चर्चा को निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए, व्यवस्थाविवरण 17:18 से इस वाक्यांश के अनुवाद से शीर्षक की व्युत्पत्ति ने एक शीर्षक प्रदान किया है जिसे गलत समझा जा सकता है, और यह एक ऐसा शीर्षक है जिसके बारे में मुझे नहीं लगता कि इसका इरादा इस तरह था मूल रचना में या उस पाठ में जिससे यह लिया गया है। अब, ऐसा कहने के बाद, दूसरा विकल्प यहूदी परंपरा के साथ जाना है: "ये शब्द हैं।" यदि सही ढंग से

समझा जाए, तो शीर्षक "ड्यूटेरोनॉमी" संभवतः "ये शब्द हैं" की तुलना में पुस्तक के बारे में अधिक जानकारी देता है, जो आपको कुछ भी नहीं बताता है।

बी। पुराने नियम में व्यवस्थाविवरण का महत्व

बी। "पुराने नियम में व्यवस्थाविवरण का महत्व" है। पृष्ठ 45 पर उद्धरण, 45 पर एक पैराग्राफ है जो सैमुअल शुल्ट्ज़ की एक दिलचस्प किताब से है, जो लंबे समय तक व्हीटन कॉलेज ग्रेजुएट स्कूल के संकाय में थे। उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम है *व्यवस्थाविवरण, प्रेम का सुसमाचार.* यह एक लोकप्रिय पुस्तक थी, व्यवस्थाविवरण की कोई तकनीकी अकादमिक चर्चा नहीं, लेकिन जिस विचार पर उन्होंने चर्चा की वह उस पुस्तक में मुझे काफी उपयोगी लगता है। पहले पैराग्राफ पर ध्यान दें जहां वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण की पुस्तक ईश्वर के रहस्योद्घाटन के दृष्टिकोण से पुराने नियम की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है।" मैं नहीं जानता, यदि कोई आपसे पूछे कि पुराने नियम की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक कौन सी है, तो क्या आपका ध्यान व्यवस्थाविवरण पर जाएगा? शायद नहीं। लेकिन वह यही कहता है। "ओल्ड टेस्टामेंट सर्वेक्षण के अपने सभी वर्षों में लेखक ने एक पुस्तक के रूप में व्यवस्थाविवरण का केवल संक्षिप्त संदर्भ दिया है जो केवल पेंटाटेच में जो पहले है उसकी समीक्षा करता है या दोहराता है।" उसने इस पर ध्यान नहीं दिया? “हालाँकि, ऐसा मामला नहीं है। यह न्यू टेस्टामेंट में सबसे अधिक बार उद्धृत की जाने वाली पुस्तकों में से एक है। ग्रीक न्यू टेस्टामेंट के अनुसार इसे लगभग 200 बार उद्धृत किया गया है। इसलिए उन्होंने वह बयान दिया है जो मुझे लगता है कि काफी प्रभावशाली है। चाहे आप उस कथन से सहमत हों या नहीं, मुझे लगता है कि आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि किसी को यह स्वीकार करना होगा कि पुराने नियम के रहस्योद्घाटन में व्यवस्थाविवरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम इस बारे में बाद में और अधिक बताएंगे। लेकिन जब आप व्यवस्थाविवरण से आगे निकल जाते हैं, तो सभी ऐतिहासिक पुस्तकों (जोशुआ, जज, किंग्स, आदि) का धर्मशास्त्र और अवधारणाएँ व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र को प्रतिबिंबित करती हैं। भविष्यवाणी पुस्तकों में व्यवस्थाविवरण का प्रभाव अक्सर काफी प्रभावशाली होता है। अतः व्यवस्थाविवरण एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है।

सेटिंग और पृष्ठभूमि

आइए इसके लिए पृष्ठभूमि में सेटिंग प्राप्त करें। मिस्र से उस उल्लेखनीय मुक्ति के बाद इज़राइल ने सिनाई में प्रभु के साथ अनुबंध किया था। सिनाई में उसने अपनी वाचा में शामिल दायित्वों से अवगत कराया। जैसा कि मैंने बताया, इज़राइल ने सिनाई छोड़ दिया, और उनके विश्वास की कमी के कारण एक पूरी पीढ़ी जंगल में मर गई। नई पीढ़ी अब कनान देश की सीमा पर जॉर्डन नदी के पार मोआब के मैदानों पर है जहां उन्होंने डेरा डाला था। इस पुस्तक में मूसा जो करता है वह इस नई पीढ़ी के लिए संक्षेप में बताता है कि प्रभु उनसे क्या अपेक्षा करता है। और वह इस नई पीढ़ी को प्रभु के मार्ग पर चलने और अपनी वाचा के दायित्वों के प्रति आज्ञाकारी होने की चुनौती देता है। मैं सोचता हूं कि आप कह सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक जितनी कानूनी है उतनी ही उपदेशात्मक भी है। यदि आप पुस्तक की संरचना को देखें, तो आप पाएंगे कि इसमें मूसा द्वारा दिए गए तीन पते हैं। वह वास्तव में इस्राएलियों को उपदेश दे रहा है, और उन्हें अपने अनुबंध के दायित्वों को पूरा करने के लिए चुनौती दे रहा है।

पेज 41 पर पैराग्राफ बी में शुल्ट्ज़ क्या कहता है, उसे देखें। मूसा उपदेश दे रहा है, और शुल्ट्ज़ कहता है कि प्रेम संदेश के केंद्र में है। “क्या करें या क्या न करें की सूची या जीवनयापन के लिए विधिवाद के नियम, न अच्छे कार्य, और न ही उच्च नैतिक मानक ही प्राथमिक फोकस था। इन सबके मूल में ईश्वर के साथ एक महत्वपूर्ण रिश्ता, प्रेम का रिश्ता था। इस प्रेम संबंध से अन्य सभी विचार उत्पन्न हुए जो मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण थे। मनुष्य के प्रति प्रेम की शुरुआत ईश्वर ने की थी। यह मानवीय क्रिया से नहीं आया. हालाँकि परमेश्वर की कोमल देखभाल पूरी मानवजाति को प्रदान की गई थी, इज़राइल के लिए परमेश्वर का प्रेम इब्राहीम, इसहाक और याकूब से शुरू हुआ। मिस्र से उनकी चमत्कारी मुक्ति के माध्यम से परमेश्वर का प्रेम पूरे राष्ट्र पर प्रकट हुआ। ईश्वर के प्रेम के प्राप्तकर्ता के रूप में, जो उसकी मुक्ति और निरंतर देखभाल के माध्यम से स्पष्ट था, इस्राएलियों से पूरे दिल से प्रेम और भक्ति के साथ प्रतिक्रिया करने की अपेक्षा की गई थी। इस प्रतिक्रिया ने उसके संपूर्ण अस्तित्व के सभी संसाधनों का दोहन किया: उसका दिल, आत्मा, दिमाग और ताकत। यह प्रेम और भक्ति अनन्य थी; किसी भी अन्य देवता को ऐसे रिश्ते में अनुमति या बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। अब फिर से इसके संदर्भ पर गौर करें। मुझे लगता है कि संदेश के केंद्र में "प्रेम" शब्द पर

ध्यान आकर्षित करने में शुल्त्स बिल्कुल सही हैं।

परन्तु जिस समय मूसा ने मोआब के मैदानों में इस्राएलियों को सम्बोधित किया, उस समय इस्राएल कनान देश में प्रवेश करके बसने ही वाला था। कनान देश के बुतपरस्त लोगों ने उन्हें अपने रीति-रिवाजों, अपने देवताओं और अपने धर्म की प्रथाओं से अवगत कराया। इज़राइल के सामने सवाल यह था: क्या वे कनानियों की प्रथाओं को अपनाएंगे और कनानियों के देवताओं को स्वीकार करेंगे, या क्या वे प्रभु के प्रति वफादार रहेंगे? मूसा के पहाड़ पर चढ़ने के बाद, वाचा की प्रारंभिक स्थापना के बाद, इस्राएल ने पूजा के मामले में क्या किया? उन्होंने पूजा करने के लिए सोने का बछड़ा बनवाया। अब आपके पास एक नई पीढ़ी है. मोआब के मैदानों में यह नई पीढ़ी क्या करने जा रही है?

मोआब के मैदान

संख्या 25 को देखें। हम पद 1 में पढ़ते हैं, "जब इस्राएल शित्तीम में रह रहा था।" शित्तीम कनान के ठीक सामने मोआब के मैदानी इलाके में एक जगह है। उस सेटिंग को प्राप्त करने के लिए, जोशुआ 2:1एल को देखें। “नून के पुत्र यहोशू ने गुप्त रूप से शित्तीम से दो जासूस भेजे।” यहोशू 3:1 को देखें: "भोर को यहोशू और सारे इस्राएली शित्तीम से निकलकर यरदन के पास गए।" वे कनान देश में जाने के लिए तैयार होकर डेरा डाले हुए हैं, और क्या होता है? संख्या 25:1 में, “जब वे शित्तीम में थे, तो पुरुष उन महिलाओं के साथ यौन अनैतिकता में लिप्त होने लगे जिन्होंने उन्हें अपने देवताओं के बलिदानों के लिए आमंत्रित किया था। लोगों ने भोजन किया और इन देवताओं को दण्डवत् किया। इसलिये इस्राएल बालपोर की उपासना में सम्मिलित हो गया। और यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भड़क उठा।”

यहाँ यह नई पीढ़ी है, मोआब के मैदानों पर, वादा किए गए देश में प्रवेश करने वाली है; फिर भी वे बुतपरस्त पूजा में शामिल हो जाते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि व्यवस्थाविवरण को उस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पढ़ा जाना चाहिए: मूसा इस्राएलियों से अपील कर रहा है कि वे विशेष रूप से प्रभु के प्रति वफादार रहें, उन्हें अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करें। वह प्रेम और भक्ति उनकी ओर से उसके दयालु और शक्तिशाली कार्यों की प्रतिक्रिया थी। उसने उन्हें मिस्र से

छुड़ाया था, वह उन्हें सीनै ले आया था, उसने उनके साथ वाचा बाँधी थी, और उसने उन्हें अपना कानून दिया था। उस नियम को याद रखें - यह अनुग्रह है, कानून है, अनुग्रह है। कानून अनुग्रह का पालन करने और आशीर्वाद की उम्मीद करने का एक साधन था। तो शुल्त्स कहते हैं, मूसा के संदेश के मूल में, यहां मोआब के मैदानों में, यह सिर्फ क्या करें और क्या न करें की बात नहीं है, यह है "अपने प्रभु अपने परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्रेम करो।" और यह केवल यहोवा के लिए ही विशेष है।

शेमा और भगवान का प्यार

व्यवस्थाविवरण 6:4-5 के उस प्रसिद्ध पाठ को देखें *शेमा*: "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है। अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करो। ये आज्ञाएं जो मैं तुम्हें देता हूं वे तुम्हारे हृदय में बनी रहें। अपने बच्चों को उनके बारे में बता कर प्रभावित करें।" श्लोक 4 का अनुवाद करना कठिन है। यदि आप हिब्रू को देखें तो वहां एक निश्चित अस्पष्टता है। एनआईवी कहता है, "हे इस्राएल, सुनो, प्रभु हमारा परमेश्वर, प्रभु एक है।" मेरी कॉपी में एक एन टेक्स्ट नोट है, और यदि आप उस एन नोट को देखते हैं तो यह कहता है, श्लोक 4 "भगवान हमारा भगवान एक भगवान है," या "भगवान हमारा भगवान है, भगवान एक है," या "भगवान हमारा भगवान एक है," या "भगवान हमारा भगवान एक है" क्या हमारा ईश्वर केवल प्रभु ही है" मेरा मानना है कि अंतिम वाला ही सबसे अच्छा है: "केवल प्रभु ही ईश्वर है। इसलिये अपने सम्पूर्ण हृदय, प्राण, मन और शक्ति से यहोवा से प्रेम करो।"

किसी भी स्थिति में, प्रेम संदेश के मूल में है। शुल्ट्ज़ पर वापस जाएँ। अनुच्छेद सी, पृष्ठ 45: "ईश्वर के साथ अनूठे रिश्ते में से, इस्राएली को अपने पड़ोसी के प्रति क्षैतिज रूप से अपना प्यार व्यक्त करना था। जब उसे ईश्वर से प्यार होने का अनुभव हुआ तभी वह अपने पड़ोसी को प्यार देने के योग्य हुआ। ईश्वर के प्रेम की गहरी अनुभूति ने वह स्रोत प्रदान किया जो इस्राएलियों को अपने साथी मनुष्य से सच्चे अर्थों में प्रेम करने की अनुमति देता है। यह वह ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज प्रेम है जिसे यीशु ने उन सभी चीजों के सार के रूप में इंगित किया जो ईश्वर ने मनुष्य से शाश्वत मोक्ष प्राप्त करने के लिए अपेक्षित की थी। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में, "प्यार को क्या चाहिए? अपने परमेश्वर

यहोवा से अपने सम्पूर्ण हृदय, मन और आत्मा से प्रेम करो; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो।" यह वह ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज संबंध है। फरीसियों के प्रतिनिधि के रूप में मोज़ेक कानून के विशेषज्ञ ने यीशु से सहमति व्यक्त की कि प्रेम का कानून अन्य सभी विचारों से अधिक महत्वपूर्ण था। यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में था कि यीशु और धार्मिक नेताओं ने लिखित रूप में मनुष्य के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन का मूल पाया। यीशु ने यह भी बताया कि यह कानून और भविष्यवक्ताओं में लिखी गई सभी बातों का सार दर्शाता है। नतीजतन, हमें इस पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए जो हमें उस संदर्भ की अंतर्दृष्टि और समझ प्रदान करती है जिसमें यह प्रेम मूसा द्वारा प्रकट और बताया गया था। तो यह वह दोहरा जोर है जो पुस्तक में पाया जाता है: ईश्वर के लिए प्रेम, और क्षैतिज रूप से अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।

मेरे पास शुल्ट्ज़ का अंतिम कथन है, "ये दो ज़िम्मेदारियाँ, ईश्वर के लिए पूर्ण प्रेम और पड़ोसी के लिए प्रेम, मनुष्य के लिए ईश्वर के संदेश का सार हैं जो होरेब में मूसा के माध्यम से प्रकट हुआ है।" अब अगले पृष्ठ पर ध्यान दें, क्योंकि मुझे लगता है कि यहीं पर व्यवस्थाविवरण को गलत समझा जाता है। *ड्यूटर-ओनोमियोस,* या दूसरा कानून, विधिवाद नहीं, अनुष्ठान नहीं, धार्मिक पालन की बाहरी सूक्ष्मता नहीं, डिकालॉग या पंथ का कानूनी पालन नहीं; इनमें से कोई भी बुनियादी नहीं था. बल्कि मूसा ने जीवन के अन्य सभी मुद्दों के लिए ईश्वर के साथ महत्वपूर्ण संबंध पर जोर दिया। इसका दूसरा कारण साथी पुरुष के साथ सच्चा प्रेम संबंध था।'' मुझे लगता है कि मोआब के मैदानों पर मूसा के उपदेश को प्रतिबिंबित करने वाले इस बुनियादी परिप्रेक्ष्य में शुल्त्स सही थे।

व्यवस्थाविवरण 6:4, परन्तु व्यवस्थाविवरण 10:12 को देखो, "और अब हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवा और क्या चाहता है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने, उसके सब मार्गों पर चले, और उस से प्रेम रखे।" भगवान क्या चाहता है? उससे डरो, उससे प्यार करो. "तू अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राण से यहोवा की सेवा करना, और जो जो आज्ञा और विधि मैं ने आज तुझे तेरे भले के लिये दी है उन का पालन करना।"

व्यवस्थाविवरण 30

व्यवस्थाविवरण 30:11 और निम्नलिखित को देखें। मैं एक मिनट में अध्याय 11 पर वापस

आऊंगा लेकिन आइए पहले अध्याय 30 पर नजर डालें। “अब जो मैं आज तुम्हें आदेश दे रहा हूं वह तुम्हारे लिए बहुत कठिन या तुम्हारी पहुंच से बाहर नहीं है। यह ऊपर स्वर्ग में नहीं है, कि तुम्हें पूछना पड़े, 'कौन इसे लेने के लिए स्वर्ग पर चढ़ेगा और हमें इसका प्रचार करेगा ताकि हम इसका पालन कर सकें?' न ही यह समुद्र के पार है, कि तुम्हें पूछना पड़े, ' कौन इसे पाने के लिए समुद्र पार करेगा और हमें इसका प्रचार करेगा ताकि हम इसका पालन कर सकें?’ नहीं, वचन तुम्हारे बहुत निकट है; यह तुम्हारे मुँह और तुम्हारे हृदय में है ताकि तुम इसका पालन कर सको। देखो, मैं आज तुम्हारे सामने जीवन और समृद्धि, मृत्यु और विनाश रखता हूं। क्योंकि मैं आज तुझे आज्ञा देता हूं, कि अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसके मार्गोंपर चलो, और उसकी आज्ञाओं, विधियोंऔर विधियोंका पालन करो; तब तुम जीवित रहोगे और बढ़ोगे, और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में आशीष देगा जिसके अधिक्कारनी होने को तुम जा रहे हो। परन्तु यदि तेरा मन फिर जाए, और आज्ञा न माने, और पराये देवताओं को दण्डवत् करने और उनको दण्डवत् करने की ओर आकर्षित हो, तो मैं आज तुझ से कहता हूं, कि तू निश्चय नष्ट हो जाएगा। जिस देश में प्रवेश करने और उस पर अधिकार करने के लिये तू यरदन पार जा रहा है, उस में तू अधिक दिन तक जीवित न रहेगा। आज के दिन मैं स्वर्ग और पृथ्वी को तुम्हारे विरूद्ध गवाह बनाता हूं, कि मैं ने तुम्हारे साम्हने जीवन और मृत्यु, आशीष और शाप रखा है। अब जीवन को ही अपना ले, कि तू और तेरे बाल-बच्चे जीवित रहें, और अपके परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखें, और उसकी वाणी सुनें, और उस पर स्थिर रहें। क्योंकि यहोवा तुम्हारा जीवन है, और जिस देश को देने की शपथ उस ने तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई थी उस में वह तुम्हें बहुत वर्ष तक देगा।” ताकि पुस्तक में वह जोर बार-बार आए।

व्यवस्थाविवरण 11 पुस्तक के संदेश का सारांश

मैंने कहा कि मैं अध्याय 11 पर वापस जाना चाहता हूँ। इसमें पुस्तक के संदेश को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें यह भी बताया गया है कि भगवान मनुष्य से क्या चाहते हैं। आइए देखें कि वह अध्याय किस प्रकार शुरू होता है। पद 1 में क्या कहा गया है? “अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, और उसकी आज्ञाओं, उसके नियमों, उसके नियमों, और उसकी आज्ञाओं का सदैव पालन

करो।” अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के पराक्रमी कार्यों का वर्णन इस प्रकार है। श्लोक 7 पर जाएँ, आप पढ़ते हैं, "यह तुम्हारी अपनी आँखें थीं जिन्होंने प्रभु द्वारा किए गए इन सभी महान कार्यों को देखा।" प्रभु द्वारा किये गये कुछ महान कार्य क्या थे? खैर, वहाँ उद्धार थे. छंद 2-4 को देखें: “आज स्मरण रखो कि तुम्हारे बच्चे वे नहीं थे जिन्होंने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अनुशासन देखा और अनुभव किया था: उसकी महिमा, उसका शक्तिशाली हाथ, उसकी फैली हुई भुजा; जो चिन्ह उस ने मिस्र के भीतर फिरौन और उसके सारे देश में दिखाए, और जो काम उस ने किए; उसने मिस्र की सेना, उसके घोड़ों और रथों से क्या-क्या किया, जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे, तब उस ने उन पर लाल समुद्र का जल डाला, और यहोवा ने उनको कैसे सदा के लिये नाश कर दिया। यह आपके बच्चे नहीं थे जिन्होंने इसे देखा था” - यह आप ही थे। पद 5 में उन्होंने अपनी ज़रूरतों के लिए प्रावधान देखे: "जब तक आप इस स्थान पर नहीं पहुँचे, तब तक उसने जंगल में आपके लिए जो कुछ किया वह आपके बच्चों ने नहीं देखा था।" उसने और क्या प्रदान किया? पद 6 में, अनुशासन और न्याय: "...और उस ने रूबेनी एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से क्या किया, जब पृथ्वी ने सब इस्राएल के बीच में अपना मुंह खोलकर उनको उनके घरानों, और उनके डेरों, और सब मनुष्यों समेत निगल लिया।" जीवित वस्तु जो उनकी थी। यह तुम्हारी ही आँखें थीं जिन्होंने ये चीज़ें देखीं।” ये 21 साल से कम उम्र के थे। मरने वालों की उम्र 21 और उससे अधिक थी। ये युवा पीढ़ी थी.

अब अतीत का वह ज्ञान - जिस तरह से भगवान ने उन्हें बचाया था, उनका समर्थन किया था, और यहां तक कि उनका न्याय भी किया था - भविष्य में क्या उम्मीद की जाए, इसका आधार साबित हुआ। इस्राएल जान सकता था कि यदि वे प्रभु के प्रति वफादार रहे, तो उन्हें भविष्य में उसका आशीर्वाद प्राप्त होगा। ध्यान दें कि श्लोक 8 में क्या लिखा है: "इसलिये जो आज्ञा मैं आज तुझे देता हूं उन सब का पालन करना, कि जिस देश के अधिक्कारनी होने को तू यरदन पार करने पर है उस में जाकर उस पर अधिकार करने का बल प्राप्त कर सके।" यदि वे आज्ञाकारी हैं, तो वे भूमि के अधिकारी होंगे और वे भूमि पर कब्ज़ा बनाए रखेंगे। पद 9, "ताकि जिस देश में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं उस देश में तुम बहुत दिन तक जीवित रहो, जिसे देने की शपथ यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी।" और यदि वे श्लोक 10-17 में दिए गए आदेशों का पालन करेंगे, तो वे देश में समृद्ध होंगे। “जिस भूमि पर तू अधिकार करने को प्रवेश कर रहा है वह मिस्र देश के समान नहीं है,

जहाँ से तू आया है, जहाँ तू ने बीज बोया और सब्ज़ी के बगीचे की नाई पैदल चलकर उसे सींचा। परन्तु जिस भूमि पर अधिकार करने के लिये तुम यरदन पार कर रहे हो, वह पहाड़ों और घाटियों का देश है, जो आकाश से वर्षा पीती है। यह वह भूमि है जिसकी तेरे परमेश्वर को परवाह है; वर्ष के आरम्भ से अन्त तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर निरन्तर बनी रहती है। इसलिए यदि तुम उन आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूं—अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना और अपने पूरे मन और अपनी सारी आत्मा से उसकी सेवा करना—तो मैं तुम्हारी भूमि पर पतझड़ और बसंत दोनों ऋतुओं में वर्षा भेजूंगा। , कि तुम अपने लिये अन्न, नया दाखमधु, और तेल इकट्ठा करो। मैं तुम्हारे पशुओं के लिये मैदान में घास रखूंगा, और तुम खाकर तृप्त होगे। सावधान रहो, नहीं तो तुम बहककर दूसरे देवताओं की पूजा करने और उनको दण्डवत् करने के लिये प्रलोभित हो जाओगे। तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और वह आकाश को बन्द कर देगा, कि मेंह न बरसेगा, और भूमि से उपज न मिलेगी, और तुम उस अच्छे देश में से जो यहोवा ने तुम्हें दिया है, शीघ्र ही नाश हो जाओगे।" वे जमीन पर कब्ज़ा रखेंगे और उसे अपने पास रखेंगे। यदि वे मानेंगे, तो वे देश के निवासियों पर जयवन्त होंगे। पद 22 देखें: "यदि तुम इन सब आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें पालन करने के लिए दे रहा हूं, अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना, उसके सब मार्गों पर चलना और उसे पकड़े रहना, ध्यान से मानो, तो यहोवा इन सब जातियों को तुम्हारे साम्हने से निकाल देगा। ; और तुम अपने से बड़े और शक्तिशाली राष्ट्रों को उजाड़ दोगे। हर एक स्थान जहां तू अपने पांव रखेगा वह तेरा हो जाएगा; तेरा क्षेत्र जंगल से लबानोन तक, और परात नदी से लेकर पश्चिमी समुद्र तक फैल जाएगा। कोई भी मनुष्य तुम्हारे विरुद्ध खड़ा न हो सकेगा। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, जैसा कि उस ने तुम से वादा किया है, सारी भूमि पर, जहां कहीं तुम जाओगे, तुम्हारा भय और भय फैला देगा। तो यह इस्राएल के सामने रखा गया है: उन्हें प्रभु से प्रेम करना है और उसके मार्गों पर चलना है और वह वर्णित तरीकों से उन्हें आशीर्वाद देगा।

आशीर्वाद और अभिशाप

लेकिन व्यवस्थाविवरण 11:26-32 में जो कुछ इस प्रकार है वह विकल्प हैं जो इज़राइल के लिए खुले हैं, और चुनाव उनका है। यदि वे आज्ञापालन करेंगे, तो वे परमेश्वर के आशीर्वाद का

अनुभव करेंगे। यदि वे अवज्ञा करेंगे, तो वे उसके अभिशाप का अनुभव करेंगे। आइए श्लोक 26 और उसके बाद को देखें। मूसा कहता है, "देख, मैं आज तेरे साम्हने आशीष और शाप रख रहा हूं, अर्थात यदि तू अपके परमेश्वर यहोवा की जो आज्ञा मैं आज तुझे देता हूं उन को माने; यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का उल्लंघन करे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज तुझे देता हूं उस से फिरकर पराए देवताओं के पीछे हो ले, जिन्हें तू नहीं जानता, तो शाप दे। जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुंचाए जिसके अधिक्कारनी होने को तू जा रहा है, तब गिरिज्जिम पर्वत पर से आशीर्वाद का, और एबाल पर्वत पर से शाप का प्रचार करना। जैसा कि आप जानते हैं, ये पहाड़ यरदन के पार, सड़क के पश्चिम में, सूर्यास्त की ओर, मोरे के विशाल वृक्षों के पास, गिलगाल के आसपास अराबा में रहने वाले उन कनानियों के क्षेत्र में हैं। तुम उस देश में प्रवेश करने और उस पर कब्ज़ा करने के लिए यरदन पार करने वाले हो जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। जब तू ने उस पर अधिकार कर लिया है, और वहां रहने लगा है, तो यह सुनिश्चित कर कि जो विधि और नियम मैं आज तेरे साम्हने रख रहा हूं उन सब का तू पालन करेगा।" तो मूसा की चुनौती है: आज्ञाकारी बनो और तुम परमेश्वर के आशीर्वाद का अनुभव करोगे; यदि तुम अवज्ञाकारी हो, तो तुम उसके शाप और न्याय का अनुभव करोगे।

यह चुनौती वास्तव में वह परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है जिससे कनान की भूमि में प्रवेश करने के बाद एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल के अनुभव को समझा जा सकता है। जोशुआ के जीवन के दौरान चीजें काफी स्थिर थीं। लेकिन आप अगली पुस्तक, न्यायाधीशों की पुस्तक, तक पहुँचते हैं। न्यायाधीशों की पुस्तक में आपके पास यह चक्र है, प्रभु और उसके निर्णय से विमुख होना। इस्राएलियों पर विभिन्न लोगों द्वारा अत्याचार किया जाता है; तब वे यहोवा की दोहाई देते हैं, वह उनका उद्धार करता है, और उन्हें शान्ति, विश्राम और आशीष मिलती है। फिर वे फिर से चक्र से गुजरते हैं, और यह सिर्फ एक चक्र की पुनरावृत्ति नहीं है - यह वास्तव में एक नीचे की ओर सर्पिल है। हालात बद से बदतर होते जाते हैं. न्यायाधीशों की पुस्तक के अंत तक यह पूरी तरह से अराजकता है, क्योंकि उन्होंने उस पैटर्न का पालन नहीं किया था जो मूसा ने उनके सामने निर्धारित किया था।

इसलिए, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि पुराने नियम की शेष पुस्तकों, ऐतिहासिक और भविष्यसूचक दोनों पुस्तकों में क्या होता है, उसे समझने के लिए व्यवस्थाविवरण मूलभूत है,

क्योंकि इज़राइल के इतिहास ने इसी पैटर्न का पालन किया है। इस वाचा के प्रावधान स्वयं ही कार्यान्वित हुए, यह इस बात पर निर्भर करता था कि इस्राएल प्रभु के मार्ग पर चला या नहीं और प्रभु से विशेष रूप से प्रेम करता था या नहीं। प्रभु ने इस्राएल को वाचा के मार्ग पर वापस बुलाने और उसकी नींव के प्रति वफादार रहने के लिए अपने भविष्यवक्ताओं को लगातार, बार-बार भेजा। कई मामलों में भविष्यवक्ता न्याय के वाचा के श्राप की घोषणा करते हैं क्योंकि लोग दूर हो गए थे। इसलिए जहां तक पुराने नियम के शेष भाग में आने वाली सभी बातों की नींव स्थापित करने की बात है, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मैं कह सकता हूं कि अध्याय 11 में, आप उस संधि संरचना पर वापस आते हैं। याद रखें हमने इस बारे में बात की थी कि कैसे व्यवस्थाविवरण ने मूल रूप से उस संरचना का पालन किया। अध्याय 11 वास्तव में बुनियादी शर्तें हैं; आपको प्रभु से प्रेम करना है, वफादारी का वह मूलभूत दायित्व है। आप देख सकते हैं कि अध्याय 12 किस प्रकार शुरू होता है, अध्याय 11 में बुनियादी शर्तों से लेकर उसके बाद आने वाली विस्तृत शर्तों तक। अध्याय 12 शुरू होता है, "ये कानूनों के आदेश हैं जिनका पालन करने में आपको सावधानी बरतनी चाहिए" - वहां आपको अनुबंध के विस्तृत दायित्व मिलते हैं।

अपनी रूपरेखा पर ध्यान दें, मैं व्यवस्थाविवरण के लेखन की तिथि के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। हमने इसके बारे में पहले ही थोड़ी बात की है, लेकिन मैं थोड़ा और कहना चाहता हूं। लेकिन हमें अगली बार उस पर गौर करना होगा।

डॉन सियान्सी और स्टेफ़नी फिट्ज़गेराल्ड द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
एलिजाबेथ फिशर द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया